राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 जून 2021
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२२
युगाब्द-५१२२, अंक-१३९, वर्ष-१४
ज्येष्ठ विक्रमी २०७८ (जून 2021)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

ओ३म् सह नाववतु सह नौ भुनक्तु। सह वीर्य्यं करवावहै। तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ १॥

–तैत्तिरीयारण्यके ब्रह्मानन्दवल्ली प्रपा० १०। प्रथमानुवाकः १॥

व्याख्यान–हे सहनशीलेश्वर! [**(सह नाववतु)**] आप और हम लोग परस्पर प्रसन्नता से रक्षक हों। आप की कृपा से हम लोग सदैव आप की ही स्तुति, प्रार्थना और उपासना करें। तथा आप को ही पिता, माता, बन्धु, राजा, स्वामी, सहायक, सुखद, सुहृद् परमगुर्वादि जानें। क्षणमात्र भी आपको भूल कर न रहें। आपके तुल्य वा अधिक किसी को कभी न जानें। आपके अनुग्रह से हम सब लोग परस्पर प्रीतिमान्, रक्षक, सहायक, परम परुषार्थी हों। एक दूसरे का दु:ख न देख सकें। स्वदेशस्थादि मनुष्यों को अत्यन्त परस्पर निर्वैर, प्रीतिमान् पाखण्ड रहित करें। **(सह नौ भनुक्त)** तथा आप और हम लोग परस्पर परमानन्द का भोग करें। हम लोग परस्पर हित से आनन्द भोगें, कि आप हमको अपने अनन्त परमानन्द के भागी करें। उस आनन्द से हम लोगों को क्षणमात्र भी अलग न रक्खे। **(सह वीर्यं करवाहै)** आप के सहाय से परम वीर्य जो सत्यविद्यादि उस को परस्पर परम पुरुषार्थ से प्राप्त करें। **(तेजस्वि नावधीतमस्तु)** हे अनन्त विद्यामय भगवन्! आप की कृपादृष्टि से हम लोगों का पठन-पाठन परमविद्यायुक्त हो। और संसार में सब से अधिक प्रकाशित हो, और अन्योन्य प्रीति से परम वीर्य पराक्रम से निष्कण्टक चक्रवर्ती राज्य भोगें। हममें सब नीतिमान् सज्जन पुरुष हों, और आप हम लोगों पर अत्यन्त कृपा करें कि हम लोग नाना पाखण्ड, असत्य, वेदविरुद्ध मतों को शीघ्र छोड़के एक सत्यसनातनमतस्थ हों, जिससे सब विद्वेष के मूल जो पाखण्ड मत, वे सब सद्यः प्रलय को प्राप्त हों। **(मा विद्विषावहै)** और हे जगदीश्वर! आप के सामर्थ्य से हम लोगों में परस्पर विद्वेष, विरोध अर्थात् अप्रीति न रहे। तथा हम लोग कभी परस्पर विद्वेष, विरोध न करें। किन्तु (सब) हम लोग तन-मन-धन-विद्या इनको परस्पर सब के सुखोपकार में परम प्रीति से लगावें। **(ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः)** हे भगवन् ! तीन प्रकार के सन्ताप जगत् में हैं एक 'आध्यात्मिक' (शारीरिक) जो ज्वारादि पीड़ा होने से होता है। दूसरा 'आधिभौतिक' ताप-जो शत्रु, सर्प, व्याघ्र, चौरादिकों से सन्ताप होता है। और तीसरा-जो मन, इन्द्रिय, अग्नि, वायु, अतिवृष्ट अनावृष्टि, अतिशीत, अत्युष्णता इत्यादि से होता है, सो 'आधिदैविक' ताप हैं। हे कृपासागर! आप इन तीनों तापों की शीघ्र निवृत्ति करे। जिससे हम लोग अत्यानन्द में और आपकी अखण्ड उपासना में सदा रहें।

हे विश्वगुरो! मुझको असत् (मिथ्या) और अनित्य पदार्थ तथा असत् काम से छुड़ाके, सत्य तथा नित्य पदार्थ और श्रेष्ठ व्यवहार में स्थिर कर। हे जगन्मङ्गलमय! (सर्वदु:खेभ्यो मोचयित्वा सर्वसुखानि प्रापय) सब दु:खों से मुझको छुड़ाके, सब सुखों को प्राप्त कर। (हे प्रजापते! सुप्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन परमैश्वर्येण संयोजय) हे प्रजापते ! मुझको अच्छी प्रजा-पुत्रादि, हस्त्यश्वगवादि उत्तम पशु, सर्वोत्कृष्ट विद्या और चक्रवर्ती राज्यादि परमैश्वर्य, जो स्थिर परमसुखकारक, उसको शीघ्र प्राप्त कर। हे परमवैद्य! (सर्वरोगात् पृथक्कृत्य नैरोग्यं देहि) सर्वथा मुझको सब रोगों से छुड़ाके परम नैरोग्य दे। हे महाराजाधिराज! [(मनसा वाचा कर्मणा अज्ञानेन प्रमादेन वा यद्यत्पापं कृतं मया तत्तत्सर्वं कृपया क्षमस्व, ज्ञानपूर्वकपापकरणान्निवर्तय माम्) मन से, वाणी से और कर्म से, अज्ञान वा प्रमाद से जो पाप किया हो, किंवा करने का हो, उस-उस मेरे पाप को क्षमा कर। और ज्ञानपूर्वक पाप करने से भी मुझको रोक दे], जिससे मैं शुद्ध होके आप की सेवा में स्थिर होऊँ। (हे न्यायाधीश! कुकामकुलोभकुमोहभयशोकालस्येर्ष्याद्वेषप्रमादविषयतृष्णानैष्ठुर्याभिमानदुष्टभावाविद्याभ्यो निवारय, एतेभ्यो विरुद्धेषूत्तमेषु गुणेषु संस्थापय माम्) हे ईश्वर! कुकाम, कुलोभादि, पूर्वोक्त दुष्ट दोषों को स्वकृपा से छुड़ाके श्रेष्ठ काम आदि में यथावत् मुझको स्थिर कर। मैं अत्यन्त दीन होके यही माँगता हूँ कि मैं आप और आपकी आज्ञा से भिन्न पदार्थ में कभी प्रीति न करूँ। हे प्राणपते, प्राणप्रिय, प्राणपित:, प्राणाधार, प्राणजीवन, स्वराज्यप्रद! मेरे प्राणपति आदि आप ही हो। मेरा सहायक आपके सिवाय कोई नहीं। हे राजाधिराज! जैसा सत्य न्याययुक्त, अखण्डित आपका राज्य है, वैसा न्यायराज्य हम लोगों का भी आप की ओर से स्थिर हो। आपके राज्य के अधिकारी किङ्कर अपने कृपाकटाक्ष से हमको शीघ्र ही कर। हे न्यायप्रिय! हमको भी न्यायप्रिय यथावत् कर। हे धर्माधीश! हमको धर्म में स्थिर रख। हे करुणामय पिता! जैसे माता और पिता अपने सन्तानों का पालन करते हैं, वैसे ही आप हमारा पालन करो।।१।।

सम्पादकीय

कोरोना एक रासायनिक हथियार?

सम्पूर्ण भूमण्डल पर स्थित विभिन्न देशों में एक ही रोग ने लगभग एक ही समय में भिन्न-भिन्न वातावरण के होते हुए भी यदि एक जैसा भय एवं आतंक उत्पन्न किया हो, तो ऐसा अब तक उपलब्ध मानव इतिहास में पढ़ने-सुनने को नहीं मिला था, किन्तु वर्तमान में सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में हम सभी इसको साक्षात् अनुभव कर रहे हैं। इस परिस्थिति में लाखों लोगों ने अपने आत्मीय परिजनों को खोया है तो करोड़ों की संख्या में लोगों ने इस महामारी का सामना किया है, कुछ लोगों ने साधारण बीमारी के रूप में तो कुछ लोगों ने गम्भीरतम रूप में जीवन और मृत्यु की सीमा रेखा पर सामना किया है, जो सुरक्षित रह गये वे भी अपने-अपने सगे-सम्बन्धी, इष्ट-मित्रों में से किसी न किसी के साथ दु:ख और संघर्ष की इस बेला पर कष्टपूर्ण परिस्थितियों में रहे हैं, किन्तु इतना नहीं तो भूमण्डल के भिन्न-भिन्न कोनों पर स्थित देश भी कभी असहाय तो कभी सहयोगी की भूमिका में देखे गए हैं। एक वर्ष पूर्व विश्व का सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका असहाय स्थिति में हमारे देश सहित अनेक देशों से सहायता मांग रहा था तो इस वर्ष हमें सहायता भेज रहा है अर्थात् मनुष्य को मनुष्य के दु:ख का जितना अनुभव होता है, लगभग ऐसे ही एक देश का दूसरे देश के प्रति भी देखने को मिल रहा है। **''विश्व स्वास्थ्य संगठन''** से लेकर विभिन्न देशों के डॉक्टर शरीर विज्ञानी एवं औषध विज्ञानी भी ऐसी परिस्थिति का सामना कर रहे हैं जिसका उन्हें न अनुमान था, न अनुभव। अत: प्रयोग एवं परिश्रम के साथ-साथ सफलता एवं असफलता भी नए-नए रूप में सामने आ रही थी, इन्हीं सब के बीच विश्वभर में फैली पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियों ने भी विश्वभर के मानव मात्र का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया, जिसमें से हम अपने श्रेष्ठ पूर्वज ऋषि-मुनियों द्वारा प्रतिपादित **'आयुर्वेद'** को जानते ही हैं। तथापि मानवरूपी समुद्र मन्थन में लगभग डेढ़ वर्ष के इस काल में कोई ऐसी अमोघ औषधि अभी तक हाथ न लगी जिससे संसारभर के लोग आश्वस्त होकर निर्भयता पूर्वक पूर्ववत् जीवनचर्या में लौट सकते। समस्या अभी भी शेष है और सावधानी एवं सहयोग की आवश्यकता यथावत् बनी हुई है।

इसी बीच विश्वभर में यह चर्चा भी तीव्रता से फैल रही है कि- आखिर इस महामारी का जन्म किस स्थान पर? किस देश में? और किन परिस्थितियों में हुआ? दो प्रश्नों का उत्तर तो लगभग स्पष्ट सा ही है कि यह वुहान शहर में हुआ जो कि हमारे पड़ोसी देश चीन में स्थित है। (लगभग और स्पष्ट सा लिखने का तात्पर्य यह है कि कुछ लोग इसे स्वीकार नहीं करते और अभी भी चीन को एक मानवीय संवदेना वाला देश मानते हैं।) फिर भी आज सर्वाधिक रहस्यमय और जानने के लिए अत्यावश्यक कोई प्रश्न है तो वह यही है कि- कोरोना वाइरस की उत्पत्ति किन परिस्थितयों में हुई? हमारी आर्ष परम्परा में यह चिन्तन धारा चिरन्तन काल से चली आ रही है कि किसी भी 'तत्त्वज्ञान' के लिए उसके मूल को जाना जाए। हाँ, अवश्य ही एक सुदीर्घकाल से आलस्यग्रस्त एवं अशक्त हो जाने पर हमारे देश में भी **'पल्लवग्राही पाण्डित्य'** अर्थात् पत्तों से ग्रहण ज्ञान ही पर्याप्त माना जाने लगा है, तथापि जो विकसित एवं सामर्थ्यशाली देश हैं, वे खोजने के प्रयास में लग ही गए हैं और लगना भी चाहिए कि- जिस महामारी ने बड़े-बड़े देशों के छक्के छुड़ा दिए आखिर वह **''प्रकृति प्रदत्त''** विपदा है या कि मायावी खोज में लगे दानवों को प्राप्त हुई कोई दानवी शक्ति है? अंग्रेजी में प्रचलित **''मैन मेड''** शब्द ठीक नहीं है, क्योंकि **'मानव'** शब्द विचारशील व्यक्तियों के लिए है, जो अच्छे-बुरे का विचार कर **'अच्छे'** के लिए आगे बढ़ते हैं और यह प्रश्न कि यह वायरस किन परिस्थितियों में उत्पन्न हुआ? तब सोचने को और भी विवश करता है, जब अनेक देशों में कोरोना से मृत्यु को प्राप्त लोग लाखों में दिखते हैं, जबकि **'चीन'** जैसे कोरोना की उत्पत्ति वाले देश में मात्र कुछ हजार लोग ही मृत्यु को प्राप्त बताए जाते हैं। अमेरिका, ब्राजील, ब्रिटेन, फ्रांस, स्पेन, जापान, जर्मनी, इटली एवं भारत सहित सैकड़ों देश जिस आपदा से त्राहि-त्राहि कर चुके और अभी भी कर रहे हैं, वहीं चीन जैसा **''कोरोना उत्पादक देश''** चैन की बांसुरी ही नहीं बजा रहा अपितु हमारे देश सहित अपने निकटवर्ती देशों को डराने-धमकाने एवं आतंकित करने के भयावह पडयन्त्रों में निरन्तर-निर्बाध लगा हुआ है, इतना ही नहीं अपितु अमेरिका को भी परमाणु हमले की धमकी दे रहा है। ऐसी परिस्थिति में दुनिया भर के सभी देशों का यह परम कर्तव्य बनता है कि सभी एकजुट होकर **'चीन'** को सत्य-सत्य उद्घाटित करने पर विवश करें! यह जानना मानवमात्र के अस्तित्व के लिए आवश्यक है कि क्या कोरोना एक बीमारी है? या एक रासायनिक हथियार है? इस सत्य तथ्य के प्रकाशित होने पर ही विश्वभर के सभी देशों की भलाई सुनिश्चित होगी। अन्यथा वैक्सीन पर वैक्सीन बनती रहेंगी, लगती रहेंगी और यह **'चायनीज कोरोना'** महामारी नए-नए रूपों (वैरीएंट) में पहले से शक्तिशाली होकर सामने आती रहेगी, हमारी सरकार को भी चाहिए कि विश्व समुदाय के सम्मुख इस दानव निर्मित दानवी शक्ति को खोज निकालने की प्रेरणा प्रदान करे। जो भी सत्य हो वह समूल सभी के सम्मुख आना ही चाहिए कि क्या कोरोना एक रासायनिक हथियार है या महामारी?

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	10 जून	दिन-गुरुवार	मास-ज्येष्ठ	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-रोहिणी
पूर्णिमा	24 जून	दिन-गुरुवार	मास-ज्येष्ठ	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-ज्येष्ठा
अमावस्या	9,10 जुलाई	दिन-शुक्र, शनि	मास-आषाढ़	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-आर्द्रा,पूनर्वसु
पूर्णिमा	24 जुलाई	दिन-शनिवार	मास-आषाढ़	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-उत्तराषाढ़ा

गृहस्थ सम्बन्ध : भाग-२३

- आचार्य संजीव आर्य, मु०नगर

बारम्बार स्मरण रहे कि समाज गृहस्थों का है अत: सर्वाधिक उत्तरदायित्व भी उन्हीं का है। उस उत्तदायित्व के अन्तरगत ही आते हैं आयु, सावधानी, नाम, कीर्ती, वातावरण, सुधार व प्रमाणिकता का समाज में पिरोना। इस श्रंखला में इसी पर विचार करते हैं। आयु-जीवन को बढ़ाना अर्थात् जीवन उन्नति के जो भी साधन हो सकते हैं उन सबकी उपलब्धता समाज तक सुनिश्चत करना जिनमें सर्वप्रमुख दो साधन हैं भोजन और चिकित्सा।

भोजन वस्त्र और व्यवहार में आर्य सदैव बहुत स्वतन्त्र वा खुली सोच वाले रहे हैं, इस आर्यावर्त्त में प्रकृतिप्रदत्त कन्द मूल फल से लेकर मनुष्य निर्मित साधारण से साधारण और विशिष्ठातिविशिष्ठ पक्वान्न व मिष्टान्न की सर्वाधिक समृद्ध परम्परा प्राचीन काल से पायी जाती है। विभिन्न क्षेत्रों में पाये जाने वाले व्यञ्जन संचार क्रान्ति के कारण अब क्षेत्रिय सीमाओं को लाँघ राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय छवि बना चुके हैं। यह भिन्न विषय या बात है कि लगातार हुवे विदेशी आक्रमणों के कारण उन-उन संस्कृतियों का प्रभाव भी यहाँ अपने लोगों पर खूब होता रहा है। जिससे मिलावट खोरी व नकली सामान की समस्या भी गम्भीर रूप से ले चुकी है। किन्तु आज भी ग्रामीण प्रायश: सरल हैं और कुछेक अत्याधनिकों को छोड़कर अधिकांशत: मिलावट नहीं करते हैं। गाँव में आज भी शुद्ध दूध-घृत, छाछ, खोवा आदि व ताजे बिना कैमिकल के फल मिल जाते हैं। हमारी विद्या सरल व सत्यनिष्ठ बना नागरिकों के साथ-साथ संसार के कल्याण का मार्ग दिखाती है। यही कारण है कि भोजन में इतना खुलापन व उन्नति होने पर भी आर्य/आर्या पशु-पक्षियों व अन्यान्य जीवों को अकारण मार, वेदाज्ञा से विरुद्ध माँसादि के भक्षण को पाप मानते थे और यह आर्यावर्त में एक प्रचलन के रूप में कभी नहीं था। इस प्रकार के निषिद्ध भोजन पान के करने वाले दस्यु व अन्त्यज समझे जाते थे और उनके साथ व्यवहार करने से बचा जाता था। यह सब ठीक होते हुवे भी पतन काल प्रारम्भ होने पर आर्यों में भोजन को लेकर बहुत सी छूआ-छूत व सखरी-निखरी आदि का बहुत सा बखेड़ा खड़ा हो गया था। जिससे राष्ट्र में प्राय: अलगाव को जन्म देकर विनाश को आमन्त्रण दिया। आर्यों आर्याओं जहाँ तक हो सके भोजन में निषिद्ध मद्यमांसादि को छोड़कर अधिक प्रतिबन्ध व मीन-मेख नहीं करना चाहिए। यह सर्वसुलभ हो तभी दूसरी उन्नतियों की ओर ध्यान जा पाता है अन्यथा **'भूखे भजन नहीं होत गोपाला'** वाली स्थितियाँ बनी रहती हैं। एक गृहस्थ को सिखाया जाता है कि वह जल, स्थल व आकाश में विचरने वाले जीवों के लिए भी अपने भोजन से भाग निकाले। आवश्यकता से अधिक का संचय कर भोजन के लिए उपद्रव करना/कराना सर्वथा अनुचित है। कहाँ तो विभिन्न अवसरों पर पौष्टिक अन्नदान हमारी परम्परा रही है और कहाँ वैदिक मान्यताओं के विरुद्ध अन्नादि का संग्रह अधिक मात्रा में करके लोगों को भूखों मरने पर विवश किया जाता है। भोजन उत्तम, शुद्ध, पौष्टिक, स्वादु, परिष्कृतादि गुण युक्त सभी को प्राप्त होना चाहिए। राजा से लेकर प्रजा तक सभी इसके लिए यथा-सम्भव कार्य करें! यह हमारे आपूर्त कर्मों में से एक है।

आयु के लिए दूसरी प्रमुख आवश्यकता है चिकित्सा। यह भी सर्वसुलभ व श्रेष्ठ हाथों में होनी चाहिए। जैसा की महर्षि चरक का मत है-

नार्थार्थं नापि कामार्थमथभूतदयां प्रति।
वर्ततेयश्चिकित्सायां स सर्वमति वर्तते।
तदेव युक्तं भैषज्यं यदारोग्याय कल्पते।
स चैव भिषजां श्रेष्टो रोगेभ्यो य: प्रमोचयेत्।

चिकित्सा क्षेत्र में आने वालों से सर्वप्रथम आशा यह की जाती है कि उनके इस क्षेत्र में आने का प्रमुख कारण अर्थ अर्थात् धन नहीं होगा और काम अर्थात् बहुत से स्वसुख की इच्छा से भी वह इस कार्य में नहीं लगेगा अपितु चिकित्सा कार्य से जुड़ने का उसका मुख्य कारण होगा सभी जीवों के प्रति दया का भाव।

वह औषधि युक्त अर्थात् ठीक है जो आरोग्य के लिए बनाई जावे और वही वैद्य श्रेष्ठ होता है जो रोगों से ठीक प्रकार से छुड़ा दे।

जब यह चिकित्सा व्यवस्था ठीक हाथों में नहीं होती तब प्रजा को अनेकों कष्ठ झेलने होते हैं साथ ही किसी चिकित्सक को दण्ड देना भी साधारण रूप से सर्वकारों के सामर्थ्य में नहीं होता है। ऐसे में चिकित्सक ओंर भी अधिक निर्भय होगा अपराधी हो जाता है। जिससे प्रजा के कष्ट बढ़ते जाते हैं। रोगों का प्रकोप बढ़ने पर अथवा महामारी आदि फैलने पर ये लोग औषधियों व चिकित्सा के उपकरणों की कालाबजारी किया करते हैं। रोगी व उसके परिजनों को डराकर उनसे अधिक धन लेकर उन्हें लूटा करते हैं। थोड़ा और साहस बढ़ जाने पर यही लोग रोगियों के शरीरों से अंग निकाल कर बेच दिया करते हैं और किञ्चित भी अपराध का अनुभव नहीं करते।

हमारे ऋषियों ने चिकित्सा को हमारे निकट फैली औषधियों से सरल व सुलभ बनाया था उसी का परिणााम था कि गुलामी के काल में जब भीषण गरीबी थी तब भी इन्हीं वनस्पतियों से लोग स्वत: अपनी व अपने परिवारों की चिकित्सा कर लिया करते थे। आज भी घर-घर में देशी औषधियों के जानकार लोग ऋषियों के इस चिकित्सा रूपी उपकार का प्रमाण हैं।

आधुनिक चिकित्सा पद्धति ने चिकित्सा को सेवा नहीं किन्तु व्यवसाय के रूप में स्थापित किया है। जिससे धन व सुख के पिपासु लोग इस कार्य क्षेत्र में जुड़कर भयानक स्तर का भ्रष्टाचार फैला रहे हैं। आकूत धन सम्पदा बना लेने के बाद भी उनकी यह भूख नहीं मिटती और **येन केन प्रकारेण** लूट तन्त्र चलता रहता है। आर्य गृहस्थों व आर्य नेताओं को चाहिए कि आयुर्वेद की चिकित्सा पद्धति को विस्तृत, सरल और नव शोधों से युक्तकर अधिक उपयोगी बनाने का यत्न करें। ऋषियों ने भोजन व चिकित्सा को वैद्यों से पूर्व गृहणियों के हाथों में इस प्रकार से सौंप दिया था कि रसोई में भोजन जब बनता था वह हमारे शरीर के होने वाले व हो चुके रोगों का शमन कर दिया करता था। है भी कितना अद्भुत एक वैद्य हमारे शरीर की अनुकूलता और प्रतिकूलता को इतना अच्छे से कभी नहीं समझ सकता जितना रसोई बनाने वाली गृहणी कर सकती है। .....

क्रमश ....

सहज सरल सांख्य-१३

- आचार्य सतीश, दिल्ली

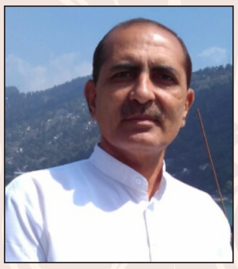

आत्मा के समस्त भोग स्थूल देह के सहारे हो पाते हैं अतः वह क्या है?

स्थूल देह पाँच भूतों से बना है। समस्त भीतरी बाहरी मुख्य भाग पृथ्वी तत्त्वों से, समस्त रक्त व धातुएँ जलीय तत्त्वों से, पाचन संस्थान तथा जीवनाकुल उष्मा अग्नि तत्त्वों से, समस्त प्राण व सर्वत्र संरचण वायु तत्त्वों से और सर्वत्र समस्त अवकाश प्रदान आकाश तत्त्वों से बने हैं।

कुछ विचारक मानते हैं कि आकाश किसी वस्तु का आरम्भक नहीं होता, अतः देह रचना में आकाश अनुपयुक्त है। इसलिए स्थूल शरीर चार तत्त्वों से बना है।

कुछ दूसरे विचरकों का कहना है कि स्थूल देह का उपादान केवल पृथ्वी तत्त्व है अन्य तत्त्व सहायक मात्र हैं। लेकिन किसी भूत तत्व को स्थूलदेह की रचना में से निकाला नहीं जा सकता, यह विचार केवल एक तत्व की प्रधानता पर आधारित होने से लगता है। वस्तुतः हम किसी भूत तत्व को बाहर नहीं कर सकते अतः स्थूल शरीर पांच तत्वों से ही बना है। यह एक निश्चित प्रमाणित तथ्य है।

यदि समस्त भोग स्थूलदेह का समबन्ध होने पर सम्पन्न हो सकते हैं, तब स्थूल देह को ही भोक्ता, चेतन मान लेना चाहिए; अतिरिक्त चेतन क्यों माना जाए?

प्रत्येक भूत में चेतन का अभाव होने से देह को चेतन नहीं मान सकते क्योंकि देह का मूल कारण सत्व, रजस्, तमस् है जो जड़ है। तब कार्य देह चेतन कैसे हो सकता है?

दूसरा, यदि समस्त भूत भौतिक तत्व चेतन माना जाए तो इस प्रतीयमान अखिल जड़ जगत् का अभाव होकर समस्त प्रपञ्च की प्रतीति नहीं होनी चाहिए। और फिर मरण आदि अवस्थाओं का भी अभाव हो जाना चाहिए क्योंकि चेतना का छोड़ जाना ही मरण है, यदि समस्त देह स्वतः चेतन है तो छोड़ जाने का प्रश्न ही नहीं रहता।

तीसरा कुछ विचारक कहते हैं कि जैसे कई ऐसे द्रव्य मिला देने से जिनमें पृथक रूप से मादकता की प्रतीति नहीं होती, मादकता का उद्भव हो जाता है; ऐसे यदि प्रत्येक मूल तत्व में चेतनता का अभाव है तो भी तत्वों के मिश्रण हो जाने पर चेतनता का उद्भव हो जाना चाहिए। इस शंका का समाधान सूत्रकार करता है कि मादक घोल के प्रत्येक द्रव्य में सूक्ष्मरूप से मादकता का अंश देखा जाता है परन्तु समस्त जगत् के मूल तत्वों में किसी भी रूप में चेतनता का अंश नहीं पाया जाता, इसलिए ऐसे तत्वों का कोई भी कार्य चेतन नहीं माना जा सकता। परिणामस्वरूप प्रत्येक देह में एक अतिरिक्त चेतन भोक्ता का स्वीकार किया जाना आवश्यक है।

देह से देहान्तर में करणों का संसरण आत्मा के भोगापवर्गरूप प्रयोजन के लिए है तो फिर इस क्रम में अपवर्ग की स्थिति कब आती है?

आत्मा संसार में प्राकृत कारणों से सांसारिक भोगों में बराबर आसक्त बना रहता है। जब उसकी प्रवृत्ति बाह्य विषयों की ओर से हटकर अन्तर की ओर झुक जाती है तब आत्मा अपने शुद्ध स्वरूप को जानने का प्रयत्न करता है तो दृढ़ व निरन्तर अभ्यास से समाधि लाभ के उपरान्त अपने शुद्ध चेतन स्वरूप को जानता है कि यह प्रकृति से स्वर्था भिन्न है। आत्मसाक्षात्कार होने पर ही मुक्ति होती है। तब करणों का समस्त व्यापार भी उसके लिए समाप्त हो जाता है।

जब तक यह अवस्था नहीं होती तब तक क्या?

आत्म ज्ञान न होने से बन्ध की अवस्था बनी रहती है और आत्मा के साथ बुद्धि आदि करणों का संसरण भोगादि के लिए बराबर बना रहता है।

मोक्ष के लिए आत्म ज्ञान के साथ अन्य विकल्प क्यों नहीं हो सकते?

जब मोक्ष अवस्था की प्राप्ति का एक कारण नियत है, निश्चित है तो फिर दूसरे विकल्प की आवश्यकता ही नहीं। कभी किसी एक कारण से, कभी किसी अन्य कारण से मुक्ति हो- ऐसा सम्भव ही नहीं।

जैसे स्वप्न और जाग्रत हो अवस्थाओं का एक ही काल में अस्तित्व सम्भव नहीं। स्वप्न की प्रतीति अस्थिर, अवास्तविक अथवा मायिक है जब्कि जाग्रत अवस्था की प्रतीति वास्तविक तथा सत्य अर्थात् अमायिक है। जैसे स्वपन जाग्रत के साथ मायिक तथा अमायिक का समुच्चय सम्भव नहीं अर्थात् विकलप सम्भव नहीं, वैसे ही पुरुष के मोक्ष लाभ में ज्ञान तथा कर्म दोनों का समुच्चय अर्थात् विकल्प सम्भव नहीं। निष्काम कर्म भोग सम्पन्न करने के अतिरिक्त अन्तकरण की शुद्धि में सहायक हैं। मोक्ष प्राप्ति के लिए तो आत्मज्ञान ही एक मात्र साधन है।

जब कर्मानुष्ठान मोक्ष लाभ में साधन नहीं है तो फिर कर्मो का अनुष्ठान का फल क्या है?

सकाम कर्म जिस फल की कामना से किया जाता है वही उसका फल होता है और उनका फल अत्यधिक काल अर्थात् अत्यान्तिक नहीं होता। निष्काम कर्म भी सांसारिक भोग फल तो देते हैं लेकिन वे अन्तःकरण की पवित्रता के लिए भी होते हैं जिससे पुरुष आध्यात्मिकता के लिए प्रेरित होता है। लेकिन उनका फल भी अत्यान्तिक नहीं होता। कर्म और ज्ञान के फलों में यही अन्तर होता है कि कर्मों का फल अल्पकाल के लिए होता है लेकिन ज्ञान का फल आत्यन्तिक होता है। इसलिए कर्म ऐहिक भोगों की प्राप्ति के लिए किए जाते हैं और आत्मज्ञान या विवेक ज्ञान अपवर्ग के लिए है।

क्रमशः ....

संध्या काल

ज्येष्ठ-मास, ग्रीष्म-ऋतु, कलि-5122, वि. 2078
(27 मई 2021 से 24 जून 2021)
प्रातः कालः 5 बजकर 15 मिनट से (5.15 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 15 मिनट से (7.15 P.M.)

आषाढ़-मास, वर्षा-ऋतु, कलि-5122, वि. 2078
(25 जून 2021 से 24 जुलाई 2021)
प्रातः कालः 5 बजकर 15 मिनट से (5.15 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 15 मिनट से (7.15 P.M.)

भारत में पर्यावरणीय चेतना एवं संरक्षण-२

-सोनू आर्य, हरसौला

महर्षि पाराशर द्वारा ''वृक्ष आयुर्वेद'' में किया गया वनस्पतियों का वर्गीकरण आधुनिक वर्गीकरण के समान है। ग्रन्थ के प्रथम भाग बीजोत्पत्ति कांड में बीज से वृक्ष बनने तथा चौथे अध्याय में प्रकाश संश्लेषण का वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। महाभारत में स्थावर प्राणियों की 6 जातियां बताई गई हैं, वृक्ष-बड़, पीपलादि, गुल्म-कुंशादि, लता-वृक्ष पर चढ़ने वाली बेल, वल्ली-पृथ्वी पर फैलने वाली बेल, त्वक्सार-बांसादि और तृण-घासादि। इनके लगाने का फल यह है कि वृक्षारोपण करने वाले मनुष्य की इस लोक में कीर्ति तथा मरने पर उसके शुभ फलों की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार बताया गया है। ''दसा कुओं के बराबर एक बावड़ी होती है, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र तथा दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है। इसी प्रकार अनेक कष्ट धूप, धूल, वर्षादि सहकर भी वृक्ष हमें फलादि देकर जो परोपकार करते हैं, के लिए भी अनेक जगह वृक्षों के प्रति कृतज्ञता वर्णन प्राचीन ग्रंथों में आता है। वृक्षों में जीव मानने के कारण ही भारतीय जनमानस वर्तमान में भी वृक्षों को काटना पाप समझता है, इसलिए हमने वृक्षों और वन्यजीवों को सहजीवी माना और उनका कल्याण चाहा। गौकरुणानिधि में महर्षि दयानन्द लिखते हैं- ''आर्यवर्तीय राजा, महाराजा, प्रधान, और धनाढ्य लोग आधी पृथ्वी पर जंगल रखते थे कि जिससे पशु-पक्षियों की रक्षा होकर औषधियों का सार दूध आदि पवित्र पदार्थ उत्पन्न हो .....। वृक्षों के अधिक होने से वर्षा-जल और वायु में आर्द्रता और शुद्धि अधिक होती है।'' न केवल वृक्षों को रखते बल्कि स्वास्थ्य और अंततः जीवन इनके बिना सम्भव नहीं की सोच के कारण वृक्षों से आत्मीयता का सम्बन्ध भी रखते थे। तुलसी, पीपल आदि के साथ भारतीय जनमानस की आत्मीयता से स्पष्ट है कि हमने कभी प्रकृति के विकृतिकरण/अतिक्रमण की चेष्टा नहीं की। जब-जब चेष्टा हुई तब-तब किसी विद्वज्जन ने हस्तक्षेप कर उसे रुकवाया।

महाभारत युद्ध से पूर्व अर्जुन को द्रोणाचार्य ब्रह्मशिर नामक असाधारण अस्त्र देते हैं, जिसे धारण करना बड़ा कठिन था, का प्रयोग मन एवं इंद्रियों को वश में कर केवल किसी अमानव शुत्र पर ही किया जा सकता था। शिवजी से प्राप्त पाशुपतास्त्र तथा इन्द्रादि से प्राप्त दिव्यास्त्र प्रयोग हेतु भी यही प्रावधान था। द्रौपदी पुत्रों की हत्या कर वेदव्यास जी के आश्रम में गया अश्वत्थामा, पांडवों को देखते ही ब्रह्मास्त्र छोड़ता है। इसके निवारण के लिए कृष्ण अर्जुन को ब्रह्मास्त्र चलाने को कहते हैं किन्तु तभी व्यास जी उन्हें ब्रह्मास्त्र लौटाने को कहते हैं। उनके अनुसार ''जिस देश में एक ब्रह्मास्त्र को दूसरे श्रेष्ठ अस्त्र से दबा दिया जाता है, उस राष्ट्र में 12 वर्षों तक वर्षा नहीं होती। उपरोक्त प्रकरणों में दिव्यास्त्र प्रयोग निषेध का एकमात्र कारण यह था कि इनसे प्राकृतिक चक्र असंतुलित हो, पृथ्वी पर से प्राणिमात्र के अस्तित्व के ही नष्ठ हो जाने की सम्भावना थी। महाभारत में अनेक विनाशकारी दिव्यास्त्रों (सम्भवत् उनकी अंतहीन क्षमता के कारण यह नाम पड़ा) का वर्णन है किन्तु पूरे युद्ध में किसी भी पक्ष की ओर से उनका प्रयोग नहीं किया गया। स्वतंत्रता के बाद किए गए दो परमाणु विस्फोटों का उद्देश्य भी भारत ने शांतिप्रिय कार्यों के लिए उपयोग घोषित किया। (1974) में किए गए प्रथम भारतीय परमाणु विस्फोट का कोड बुध मुस्कुराए या स्माइलिंग बुद्धा संभवत इसी कारण रखा गया था।) इनके युद्ध में पहल न करने की नैतिक नीति का निर्वहन भारत आजतक भी कर रहा है, जो पुनः हमारे इस विचार की पुष्टि करता है कि भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के प्रति आत्मीयता एवं उसके संरक्षण के प्रति सजगता रही है। नितांत आवश्यकता में जब अतिक्रमण की जरुरत पड़ी, तो पृथ्वी के प्रति कृतज्ञता का गहरा भाव हमने प्रकट किया। न केवल ऐतिहासिक प्रकरणों तथा सिद्धान्त में अपितु पर्यावरण संरक्षण हेतु व्यवहारिक दिनचर्या का प्रावधान हमारे पूर्वजों ने आर्ष ग्रंथों में किया जिसे भारतीयों ने व्यवहार में उतारा भी। जिसका प्रमाण हमारे दैनिक पंचमहायज्ञ हैं, जिनमें से भूत या बलिवैश्वयज्ञ द्वारा आश्रित जीवों गाय, कौवा, चींटी आदि को भोजन देने का प्रावधान है। भारत में तो विशेष पर्व पर सांपों तक को दूध पिलाया जाता है। देवी-देवताओं के वाहनों के रूप में विभिन्न प्राणियों का सांकेतिक चित्रण वन्य जीवन तथा पर्यावरण के प्रति आत्मीयता को ही दर्शाता है।

पंच महायज्ञ में ही देवयज्ञ (हवन) का मुख्य प्रयोजन ही यह है कि इससे सामग्री रूप में डाली गई औषधियां व अन्य पदार्थ सूक्ष्म हो वातावरण से दुर्गंधनाश कर वायु को शुद्ध करें जिससे अन्न, जल, औषधियां आदि पदार्थ शुद्धि को प्राप्त होवें। यज्ञथैरेपी से रोगानुसार औषधियां डाल हवन करने पर रोगोपचर संभव है। रेडिएशन प्रभाव को यज्ञ से दूर किया जा सकता है। 1984 में भोपाल गैस कांड जिसमें यूएसए की यूनियन कार्बाइड कम्पनी के प्लांट में मिथाइल आइसोसाइनेट (एम. आई.सी.) गैस रिसाव से चन्द घंटों में हजारों लोग मौत की नींद सो गए किन्तु दो परिवार (सोहन लाल कुशवाहा व एम.एल. राठोर) जो कारखाने से महज 2 मील दूरी पर थे सुरक्षित रहे। कारण तलाशने पर ज्ञात हुआ कि उनके घरों में प्रतिदिन गाय के गोबर, घी, लकड़ी व औषधियों से हवन किया जाता था। हवनगंध ने एन्टीडोट का कार्य किया। प्रतिष्ठित अखबारों में प्रकाशित होने के बाद भारत तथा यूएसए में हुए विभिन्न शोध नतीजों के फलस्वरूप पाश्चात्य एवं आधुनिक भारतीय विद्वान यज्ञ विज्ञान की पर्यावरणीय महत्ता को स्वीकारने लगे हैं। भारतीय पर्व जो अधिकतर फसल पकने व ऋतुपरिवर्तन से ही सम्बद्ध हैं को मनाने की विधि नई फसल से हवन करना ही थी, ताकि ऋतुपरिवर्तन से होने वाले रोगों का उपचार हो। क्योंकि सम्पूर्ण चराचर जगत को हमने अपना परिवार माना, अतः आहुति में **इदं न मम** अर्थात् यह मेरा नहीं की भावना से अग्नि में डाले गये पदार्थों का लाभ ताकि सभी प्राणियों को मिले, से प्राणीमात्र के साथ बांटकर खाने का भाव भी स्पष्ट होता है।

क्रमश ....

आर्योद्देश्यरत्नमाला

प्रणेता - ऋषि दयानन्द
व्याख्याता - आचार्य परमदेव मीमांसक

८. **विश्वास**-जिस का मूल अर्थ और फल निश्चय करके सत्य ही हो; उसका नाम **'विश्वास'** है।।

व्याख्या-जिसका मूल वस्तु हो, अर्थात् जो सत्तात्मक हो केवल ख्याली कल्पना न हो, अपितु प्रमाणादि से युक्त हो और फल निश्चय करके सत्य ही हो उसका नाम विश्वास है; जैसे कि देवदत्त कक्षा में सर्वप्रथम आयेगा ऐसा हमें विश्वास है तो यहां सर्वप्रथम देवदत्त तो होना ही चाहिए इसकी सत्ता के अभाव में फल क्या होगा? कुछ नहीं, यह ख्याली कल्पना मात्र होगी; और देवदत्त के होने पर भी यदि उसकी बुद्धि तीव्र न हो, पुरुषार्थी न हो तो यह आस्था कभी भी फलवती नहीं होगी, कोरी कल्पना मात्र होगी, अतः प्रमाणादि से सम्भव होने पर आस्था रखना (मानना) ही **विश्वास** है।

९. **अविश्वास**-जो विश्वास से उल्टा है। जिस का तत्त्व अर्थ न हो; वह **'अविश्वास'** कहाता है।।

व्याख्या-जिसकी सत्ता ही न हो उसको मानना अविश्वास है, अथवा किसी की सत्ता (अस्तित्व) हो परन्तु उसको न मानना भी अविश्वास कहलाता है। जैसे भूत को मानना अविश्वास है, उसी तरह ईश्वर को न मानना भी **'अविश्वास'** है।।

१०. **परलोक**-जिसमें सत्यविद्या करके परमेश्वर की प्राप्ति पूर्वक इस जन्म व पुनर्जन्म और मोक्ष में परम सुख प्राप्त होना है; उसको **'परलोक'** कहते हैं।।

व्याख्या-वेद, उपनिषद्, योगादि विद्या को ग्रहण करके परमेश्वर को इसी जन्म में समाधि में प्राप्त करके परमसुख पाना, योग में युक्त रहने पर श्रेष्ठ (दूसरे) जन्म को प्राप्त करना, योग में पूर्णता पर शरीर त्याग कर मोक्ष (आनन्द) को प्राप्त करना **'परलोक'** है।।

११. **अपरलोक**-जो परलोक से उलटा है जिसमें दुःखविशेष भोगना होता है वह **'अपरलोक'** कहाता है।।

व्याख्या- समाधि आदि सुख को छोड़ इस जन्म में जो दुःख भोगना पड़ता है, अपरलोक कहलाता है, इसी में दुःखविशेष भोगने पड़ते हैं।

१२. **जन्म**-जिसमें किसी शरीर के साथ संयुक्त होके जीव कर्म करने में समर्थ होता है, उसको **'जन्म'** कहते हैं

व्याख्या-'जन्म' जो शरीर धारण कर प्रकट होना सो पूर्व, पर और मध्य भेद से तीनों प्रकार का मानता हूँ।

(सत्यार्थप्रकाश-स्व० प्रकाश)

शरीर धारण कर प्रकट होना जन्म है, यह पूर्व जन्म, वर्तमान जन्म और भावी जन्म तीनों प्रकार का होता है। पहले शरीर धारण किया था वह पूर्वजन्म, जिस शरीर में इस समय हैं वह वर्तमान जन्म, और भविष्य में जिस शरीर के साथ संयुक्त होगा वह भावी **जन्म** कहलाता है।

१३. **मरण**-जिस शरीर को प्राप्त होकर जीव क्रिया करता है उस शरीर और जीव का किसी काल में जो वियोग हो जाना है, उसको **'मरण'** कहते हैं।

व्याख्या-शरीर से जीव के वियोगमात्र को **मरण** (मृत्यु) कहते हैं।।

१४. स्वर्ग-जो विशेष सुख और सुख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, वह **स्वर्ग** कहाता है।

व्याख्या-**स्वर्ग नाम सुख विशेष भोग और उस की सामग्री की प्राप्ति का है।** (सत्यार्थप्रकाश-स्व० प्रकाश)

सामान्य सुख तो मिलते रहते हैं, परन्तु जब विशेष सुख जैसे राज्य आदि मिलें तो यही स्वर्ग की प्राप्ति है।

१५. **नरक**-जो विशेष दुःख और दुःख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, उसको **नरक** कहते हैं।

व्याख्या-**नरक जो दुःख विशेष भोग और उस की सामग्री को प्राप्त होना है।** (सत्यर्थप्रकाश-स्व० प्रकाश)

विशेष दुःख जैसे गलित कीटयुक्त कुष्ठ आदि की प्राप्ति ही **नरक** है।

१६. **विद्या**-जिससे ईश्वर से लेके पृथिवी पर्यन्त पदार्थों का सत्यविज्ञान होकर उन से यथायोग्य उपकार लेना होता है इसका नाम **'विद्या'** है।

व्याख्या-विद्या ज्ञान का नाम है, किसी ग्रन्थमात्र का नहीं। ऐसा ज्ञान जो ठीक-ठीक हो, भ्रमादि से रहित हो, उससे ईश्वर से लेकर पृथ्वी पर्यन्त समस्त पदार्थों का यथावत् बोध होवे और इन तत्त्वों से यथायोग्य उपकार लिया जावे, विद्या कहाती है। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद के द्वारा ईश्वर से लेकर पृथिवी पर्यन्त पदार्थों का बोध होता है, ऋषियों द्वारा प्रतिपादित ग्रन्थ भी इन पदार्थों के बोध में सहायक होते हैं। आधुनिक वैज्ञानिक और तत्ववेत्ता जिन पदार्थों का बोध कराते हैं, वे पूर्णतः निर्भ्रान्त नहीं होते हैं। यही कारण है कि इनके सिद्धान्त बदलते रहते हैं, परन्तु जो प्रायोगिक रूप हैं वे ग्राह्य हैं, उपकार लेने के योग्य हैं।।

१७. **अविद्या**-जो विद्या से विपरीत है, भ्रम, अन्धकार और अज्ञानरूप है, इसलिए इस को **'अविद्या'** कहते हैं।

व्याख्या-मनःकल्पित विचार जो प्रमाणादि से रहित अर्थात् मुख्यतः प्रत्यक्ष, अनुमान और वेद रूपी शब्दप्रमाण से रहित हो, अज्ञानरूप तथा भ्रमरूप ही है। जैसे-बाइबिल में पृथ्वी को चपटी कहा है, परन्तु यह अज्ञानरूप ही है, क्योंकि इसमें प्रत्यक्ष और अनुमान नहीं घटता है। पृथ्वी से ऊपर जाने पर यह गोल दिखाई पड़ती है, और वेद में भी गोल कहा हुआ है। अतः यह बाइबिल के रचयिताओं का मनःकल्पित विचार **'अविद्या'** ही है।

१८. **सत्पुरुष**-सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान्, सब के हितकारी और महाशय होते हैं, वे **सत्पुरुष** कहाते हैं।

व्याख्या-सत्य ही जिन को प्रिय है, जो धर्म का पालन करते हैं, वेदों के जानकार हैं, सब का हित करने वाले हैं, जिनका विचार उच्च होता है और जिन का उद्देश्य मोक्षगामी होता है; वे **सत्पुरुष** कहलाते हैं।

क्रमश ....

एकांगी शिक्षा के दुष्परिणाम

-आचार्य डॉ. महेशचन्द्र आर्य, भिवानी

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के लिए जीवनदायिनी शक्ति है। यह वह स्तम्भ है जिस पर किसी भी राष्ट्र की उन्नति-अवनति उत्थान-पतन निर्भर करता है। प्राचीन काल में जिस समय यह राष्ट्र विश्वगुरु कहलाता था तब इस देश में गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति प्रचलित थी। राज व्यवस्थाएँ व समस्त लोग ऐसी प्रणाली का पुष्ट करते थे। उसी काल में यह राष्ट्र धन-ऐश्वर्यों का स्वामी रहा और साथ ही साथ अखण्ड रूप से अपराजेय रहा। गुरुकुलीय वातावरण में एक बालक को सांगोपांग वेदविद्या के साथ-साथ आचार-व्यवहार, आहार-विहार, चरित्र, शारीरिक, आत्मिक बल बढ़ाने का ही अवसर प्रदान नहीं किया जाता था अपितु अपने भावी जीवन के निर्वहन की सभी योग्यताएँ धारण करने का अथक पुरुषार्थ किया जाता था। जिससे वह बालक एक सुयोग्य युवक बनकर अपने परिवार, समाज व राष्ट्र निर्माण में पहली भूमिका निभाता था। कालान्तर में हम सब जानते हैं कि महाभारत के युद्ध और उसके उपरान्त उत्पन्न परिस्थितियों के परिणामस्वरूप हमारे बालकों को सुयोग्य बनाने वाली गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई। **'ऐतद्देशः प्रसूतस्य सकाशाद अग्रजन्मनाः। स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥''** का उद्घोष करने वाली यह आर्यावर्त्त की भूमि अपने उद्दात जीवन मूल्यों, जीवन परम्पराएँ संस्कृति से विमुख होती चली गई और परतंत्रता के गहरे कूप में गिरकर अपने धन-ऐश्वर्यों, ज्ञान-विज्ञान, गौरव-गरिमा, करोड़ों वर्षों का चक्रवर्ती साम्राज्य खो बैठी। छोटे-छोटे म्लेच्छ समूहों के हम गुलाम हो गए, स्वर्ण आभूषणों से लथपथ रहने वाले लोग कौड़ी-कौड़ी के मोहताज हो गए। शिक्षा के नाम पर म्लेच्छों की संस्कारविहीन, उद्देश्यविहीन, मूल्यविहीन पद्धतियाँ, पाठ्यक्रम, हम पर थोंप दिए गए जिससे हम सब अपने मनुष्य जीवन के वास्तविक उद्देश्य धर्मार्थ काममोक्ष से वंचित होकर केवल रोटी, कपड़ा और मकान तक सीमित कर दिए गए। करोड़ों वर्षों तक अजेय-अपराजेय राष्ट्र हजारों वर्षों तक गुलामी की चादर ओढ़े रहा। यवन, मिश्र, शक, हूण, प्रशियन, मुगल, डच, फ्रेंच, अंग्रेज यहाँ पर आक्रमण पर आक्रमण करते रहे। मुगलों की गुलामी से छूटकर यह देश अंग्रेजों के गुलाम हुए। अंग्रेजी गुलामी के काल में नई शिक्षा पद्धति लागू हुई। जहाँ हमारी प्राचीन शिक्षा का मूल उद्देश्य मुक्ति और बोध था वहीं इस शिक्षा का उद्देश्य मात्र गुलामी की परम्पराओं, प्रथाओं, रीति-नीतियों को पुष्ट करना था। उसी गुलामी में इसी शिक्षा में सुधार के नाम पर वुड का घोषणा पत्र, हंटर आयोग, शिमला शिक्षा सम्मेलन, भारतीय विश्वविद्यालय आयोग, बुनियादी शिक्षा घोषणापत्र जैसी योजनाएँ क्रियान्वित की गई परन्तु परिणाम वहीं ढाक के तीन पात।

अनेक महापुरुषों, क्रान्तिकारियों बलिदानियों के साझे प्रयासों से हम 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजी दासता से मुक्त हुए। लम्बी दासता ने हमें न केवल आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक रूप से कमजोर किया अपितु हमारे जनजीवन, मानसिकता को भी अभूतपूर्व रूप से निर्बल किया जिससे हम स्वतन्त्रता के बाद भी अपनी शिक्षा पद्धति में अपेक्षित बदलाव करने का विचार तक नहीं कर पाए। इसके परिणाम स्वरूप स्वतन्त्रता उपरान्त हमने मैकाले शिक्षा पद्धति को अपनाए रखा। जिन आकांक्षाओं को लेकर हमारे महापुरूषों ने बलिदान दिए, जिन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिवर्तनों हेतु यातनाएँ सही, जीवन लगाया, वे आज भी उतनी ही अधूरी थी जितनी गुलामी के काल में थी। यूँ तो स्वतन्त्रता के बाद से ही शिक्षा सुधार की दुहाई देकर अनेक अयोग-समितियाँ-अभियान चलाए गए राधाकृष्ण आयोग (1948-49), माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53), कोठारी शिक्षा आयोग (1964-66), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968), नवीन शिक्षा नीति (1986), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), डी. पी.ई.पी., एस.एस.ए., आर.एम.एस.ए. आदि। परन्तु उद्देश्य सही न होने से परिणाम भी नहीं बदला करते। आज भी सरकारी आंकड़ों में शिक्षितों की संख्या बढ़ने के बावजूद अंधविश्वास, ढ़ोंग-पाखण्ड, भ्रष्टाचार, दुराचार, अनाचार, भेदभाव, हिंसा, छल-कपट, चोरी, लूट, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, अलगाववाद, क्षेत्रवाद, बेरोजगारी, गरीबी, भय, अन्याय, शोषण, बलात्कार, नग्नता, असभ्यता, अश्लीलता जैसी अनेक बुराइयाँ बढ़ती जा रही हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त युवा थोड़ी सी असफलता मिलने पर अवसादग्रस्त हो रहे हैं, आत्महत्या कर रहे हैं। यह शिक्षा इतनी पंगु है कि यह हमारे युवाओं को जीवन का महत्व तक समझाने में अक्षम है। पढ़ा-लिखा व्यक्ति स्वार्थी होकर केवल अपनी उन्नति (वह भी केवल भौतिक) के लिए प्रयास करता है चाहे उसके लिए उसे दूसरों को रौदंना क्यों न पड़े। शिक्षा के विकास के नाम पर केवल आकंड़ेबाजी हो रही है। संख्यात्मक वृद्धि को ही उन्नति माना जा रहा है। शिक्षा जो मनुष्य मात्र का नैसर्गिक अधिकार है, उसे व्यापारियों के हाथों सौंपा जा रहा है अर्थात् शिक्षा को बाजारू बनाया जा रहा है। जो शिक्षा बालक-बालिकाओं को अलग-अलग संस्थाओं में मिलनी चाहिए उसे सह शिक्षा (Co-Education) के नाम पर युवक-युवतियों को एक साथ एक ही स्थान पर परोसा जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय चरित्र बिगाड़ने के माध्यम बनते जा रहे हैं। जिस शिक्षा पर मानवमात्र का अधिकार है उसका निजीकरण करके हमारे बालकों को तथाकथित गुणात्मक शिक्षा से भी वंचित किया जा रहा है।

सुधि पाठको! आपके मन में विचार आ रहा होगा कि ये तो केवल आलोचना है, इससे क्या होने वाला है? क्या विज्ञान प्रोद्यौगिकी आदि पढ़ाना अनुचित है? निश्चित ही ये विषय पढ़ाना उचित है परन्तु इनके इस एकांगी शिक्षा (मूल्यविहीन) के साथ-साथ प्राचीन शिक्षा को जोड़ना चाहिए। आइए शिक्षा के मूल उद्देश्यों को समझते हुए उपायों पर विचार करें।

हमारे प्राचीन ग्रन्थों में शिक्षा और उसके उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से प्रकट किया गया है। सत्यार्थ प्रकाश में ऋषि दयानन्द सरस्वती शिक्षा की परिभाषा देते हैं, जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें उसको शिक्षा कहते हैं।'' वेद में भी शिक्षा व उसके उद्देश्यों को लेकर अनेक मन्त्र हैं। -ऋग्वेद मन्त्र **'अपो महि व्ययति चक्षसे तमो ज्योतिष्कृणोति'** अर्थात् शिक्षा अज्ञानान्धकार दूर करती है और ज्ञान ज्योति प्रदान करती है। यजुर्वेद कहता है- **''ऋतं च मेऽमृतं च मे''** अर्थात् शिक्षा के द्वारा मुझे सत्य और अमरत्व प्राप्त हो। शिक्षा केवल नैतिक जीवन मूल्य और सभ्य व्यवहार ही विकसित न करे अपितु ईश्वर से लेकर

पिछले पृष्ठ का शेष ..... (एकांगी शिक्षा के दुष्परिणाम)

पृथ्वी पर्यन्त सभी पदार्थों का भी यथोचित बोध करावे। इसी संदर्भ में अथर्ववेद कहता है- **''आचार्य स्ततक्ष नभसी उभे इमें।''** अर्थात् आचार्य शिष्य को द्युलोक और पृथ्वी का ज्ञान दे। आचार्य शिष्य की सभी जिज्ञासाओं को शिक्षा के माध्यम से शान्त करे, **''शिक्षानरः प्रदिवो अकामकर्शन''** -अथर्ववेद अर्थात् शिक्षक तेजस्वी हो और शिष्यों की जिज्ञासाओं को न दबावे। शिक्षा न केवल व्यक्ति को मूल्यों के धरातल पर बलवान बनावे अपितु उसके जीवनयापन का साधन भी प्रदान करे। **''त्वं नो अस्या अमतेरूत क्षुधः।''** -ऋग्वेद अर्थात् आचार्य हमें अशिक्षा और भूख के कष्ट से मुक्त करे। शिक्षा व्यक्ति को चरित्रवान बनावे। **''आ मा सुचरिते भज।''** -यजुर्वेद अर्थात् एक विद्यार्थी प्रार्थना करता है कि हे ईश! मुझे सच्चरित्रता दो। शिक्षा व्यक्ति को इतना समर्थ बनावे कि वह जीवन पथ पर आने वाली हर बाधा को दूर करते हुए एक सशक्त परिवार, समाज और राष्ट्र की नींव रखे। शिक्षा व्यक्ति को इतना सबल बनावे कि वह अपने राष्ट्र को अखण्ड रखने में सहायक हो, अन्यथा आज अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के नाम पर राष्ट्र के टुकड़े करने के नारे लगाए जाते हैं। शिक्षा व्यक्ति को आचरण सिखावे जिससे उसके अन्दर **'मातृवत् पर दारेषु; पर द्रव्येषु लोष्ठवत्। स्व आत्मवत् सर्वभूतेषु'** की भावना उत्पन्न हो।

हमने जान लिया कि निश्चय ही शिक्षा के उद्देश्य उदात्त हैं। परन्तु आज की शिक्षा प्रणालियों में भौतिक उन्नति (विज्ञान-प्रोद्यौगिकी, तकनीकी, गणित, भूगोल आदि) को छोड़कर मानव को उसके वास्तविक उद्देश्य की ओर ले जाने वाले अधिकांश मूल्यों, सिद्धान्तों की अवहेलना हो रही है। मानव जीवन का उद्देश्य मात्र जीवन सुरक्षा और जीवनयापन (रोटी, कपड़ा और मकान) ही रह गया है। धार्मिक (तथाकथित) या सामाजिक संस्थाएँ भी मूल्यों के नाम पर अधिकांशतः मिलावटी या भ्रमित करने वाले सिद्धान्त परोस रहे हैं। जिनको (आर्यों को) इसकी जानकारी है, उन्हें नीति निर्माण में कहीं स्थान प्राप्त नहीं है, सो किया क्या जाए? इसके दो उपाय हैं, प्रथम आपातकालीन व दूसरा दीर्घकालीन। पहला उपाय है कि हम जीवनयापन आदि के लिए वर्तमान शिक्षा प्राप्त करते-कराते हुए स्वयं व अन्यों को राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय आर्य प्रशिक्षण सत्रों (लघु गुरुकुल) के माध्यम से श्रेष्ठ सिद्धान्तों से लैस करें। दीर्घकालीन उपाय है कि हम आर्यों के हाथ में राजनीतिक सत्ता आए जिससे मानव-मात्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने वाली गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति पुनः स्थापित हो, जिससे हम विज्ञान, प्रोद्यौगिकी, तकनीकी शिक्षा के साथ-साथ जीवन मूल्यों, सभ्यता, संस्कृति, परम्परा, धर्म की शिक्षा भी अपने बालकों को दे सकें। वर्तमान परिस्थितियों में आपातकालीन उपाय ही दीर्घकालीन उपाय का पूरक हो सकता है। इसके लिए हमें युद्ध स्तर पर दो दिवसीय लघु गुरुकुलों का आयोजन करके राजनीतिक पृष्ठभूमि तैयार करनी होगी। यही वास्तविक उन्नति का आधार है। अतः हे आर्यों, आर्याओं, आर्य सन्तानों उठो! इस समस्त भू-मण्डल के लिए कल्याणकारी गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की नींव रखने का महान्‌कार्य प्रारम्भ करो। परमात्मा हमें हमारे इस उद्देश्य पूर्ति में हमारा सहयोग करेंगे।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट- **www.aryanirmatrisabha.com** पर उपलब्ध है। अतः आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अतः पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक- www.aryanirmatrisabha.com/हिन्दी में पत्रिका पर जाएं।

27 मई- 24 जून 2021 — ज्येष्ठ — ऋतु- ग्रीष्म

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
			ज्येष्ठा कृष्ण प्रतिपदा 27 मई	मूल कृष्ण द्वितीया 28 मई	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण तृतीया/चतुर्थी 29 मई	उत्तराषाढ़ा कृष्ण पंचमी 30 मई
श्रवण कृष्ण षष्ठी 31 मई	धनिष्ठा कृष्ण सप्तमी 1 जून	शतभिषा कृष्ण अष्ठमी 2 जून	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण नवमी 3 जून	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण दशमी 4 जून	रेवती कृष्ण एकादशी 5 जून	अश्विनी कृष्ण एकादशी 6 जून
भरणी कृष्ण द्वादशी 7 जून	कृतिका कृष्ण त्रयोदशी 8 जून	कृतिका कृष्ण चतुर्दशी 9 जून	रोहिणी कृष्ण अमावस्या 10 जून	मृगशिरा शुक्ल प्रतिपदा 11 जून	आर्द्रा शुक्ल द्वितीया 12 जून	पुनर्वसु शुक्ल तृतीया 13 जून
पुष्य शुक्ल चतुर्थी 14 जून	आश्लेषा शुक्ल पंचमी 15 जून	मघा शुक्ल षष्ठी 16 जून	पू॰ फाल्गुनी शुक्ल सप्तमी 17 जून	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल अष्ठमी 18 जून	हस्त शुक्ल नवमी 19 जून	चित्रा शुक्ल दशमी 20 जून
स्वाती शुक्ल एकादशी 21 जून	विशाखा शुक्ल द्वादशी 22 जून	अनुराधा शुक्ल त्रयोदशी/चतुर्दशी 23 जून	ज्येष्ठा शुक्ल पूर्णिमा 24 जून			

25 जून-24 जुलाई 2021 — आषाढ़ — ऋतु- वर्षा

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
				मूल/पूर्वाषाढ़ा कृष्ण प्रतिपदा 25 जून	उत्तराषाढ़ा कृष्ण द्वितीया 26 जून	श्रवण कृष्ण तृतीया 27 जून
धनिष्ठा कृष्ण चतुर्थी 28 जून	शतभिषा कृष्ण पंचमी 29 जून	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण षष्ठी 30 जून	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण सप्तमी 1 जुलाई	रेवती कृष्ण अष्ठमी 2 जुलाई	रेवती कृष्ण नवमी 3 जुलाई	अश्विनी कृष्ण दशमी 4 जुलाई
भरणी कृष्ण एकादशी 5 जुलाई	कृतिका कृष्ण द्वादशी 6 जुलाई	रोहिणी कृष्ण त्रयोदशी 7 जुलाई	मृगशिरा कृष्ण चतुर्दशी 8 जुलाई	आर्द्रा कृष्ण अमावस्या 9 जुलाई	पुनर्वसु कृष्ण अमावस्या 10 जुलाई	पुष्य शुक्ल प्रतिपदा 11 जुलाई
आश्लेषा शुक्ल द्वितीया 12 जुलाई	मघा शुक्ल तृतीया 13 जुलाई	पू॰ फाल्गुनी शुक्ल चतुर्थी 14 जुलाई	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल पंचमी 15 जुलाई	हस्त शुक्ल षष्ठी/सप्तमी 16 जुलाई	चित्रा शुक्ल अष्टमी 17 जुलाई	स्वाती शुक्ल नवमी 18 जुलाई
विशाखा शुक्ल दशमी 19 जुलाई	अनुराधा शुक्ल एकादशी 20 जुलाई	ज्येष्ठा शुक्ल द्वादशी 21 जुलाई	मूल शुक्ल त्रयोदशी 22 जुलाई	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल चतुर्दशी 23 जुलाई	उत्तराषाढ़ा शुक्ल पूर्णिमा/प्रतिपदा 24 जुलाई	

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।